राजनीतिक संरक्षण में जबरन खोला गया श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल, आरएसएस ने जमाया कब्जा

अदालत के आदेश पर लगी नगर निगम की सील टूटी, कोविड सेंटर की आड़ में ओपीडी चलेगी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: पंजाबी बिरादरी की एकता को तार-तार करते हुए राजनीतिक आकाओं का सहारा लेकर तिकोना पार्क स्थित श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को खोल दिया गया है। अस्पताल एक तरह से आरएसएस के कब्जे में चला गया है और इस अस्पताल को चलाने वाली संस्था श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी की भूमिका शून्य हो गई है। सोसायटी के निलंबित प्रधान कंवल खत्री ने भाजपा विधायक सीमा त्रिखा का साथ लेकर इसे राजनीतिक रंग दे दिया है। अस्पताल की चाबी लोकल धर्मगुरु पीर जगन्नाथ के पास रखी रह गई। उनकी अनदेखी कर अस्पताल को खोला गया। नगर निगम की जमीन पर अवैध कब्जे की वजह से एमसीएफ ने अपनी सील भी अस्पताल पर लगा रखी थी लेकिन रजिस्ट्रार सोसायटीज फरीदाबाद द्वारा नियुक्त प्रशासक ने डीसी से मौखिक रजामंदी लेकर सील को तोड़ दिया है।

सोसायटी के उपप्रधान विशाल भाटिया, अस्पताल के संस्थापक सदस्य एसएम हाशमी, समाजसेवी आनंदकांत भाटिया जिला प्रशासन और एमसीएफ को लगातार लिख रहे थे कि इस अस्पताल को सरकारी नियंत्रण में लेकर कोविड सेंटर बना दिया जाए। इससे पहले की जिला प्रशासन उस पर कोई एक्शन लेता, अस्पताल को लेकर राजनीति शुरू हो गई।

आरएसएस वालों के साथ सीएमओ का दौरा

बीके अस्पताल के सीएमओ ने गुरुवार को अस्पताल का दौरा कर हालात का जायजा लिया। लेकिन सबसे ज्यादा खटकने वाली बात यह रही कि आरएसएस के पदाधिकारी और सेवाभारती का काम देखने वाले गंगाशंकर यहां आगे-आगे थे और मीडिया को भी वही संबोधित कर रहे थे। गंगाशंकर ने कहा कि हमारी सेवाभारती और संघ के स्वयंसेवक यहां तैनात रहेंगे। गंगाशंकर ने मौके पर दावा किया कि हमें इसका अनुभव है। संस्था के निलंबित प्रधान कंवल खत्री ने वह सच मीडिया के सामने उगल दिया जिसे सामने लाने में आनाकानी की जा रही थी। कंवल खत्री गुट ने प्रशासन को यही बताया है कि वे अस्पताल में कोविड सेंटर बनाना चाहते हैं। जिला प्रशासन ने हालात को देखते हुए इसकी अनुमति दे दी। लेकिन मीडिया के सामने कंवल खत्री ने कहा कि कोविड को लेकर हमारे पास संसाधन नहीं है। हम अपनी ओपीडी शुरू करेंगे। जो मरीज आयेंगे उनको देखेंगे। कोविड वगैरह के लिए प्रशासन को हमारी मदद करनी पड़ेगी। उन्होंने यह भी बताया कि यहां 25 बेड लगाए जाएंगे और मरीजों का इलाज किया जाएगा।

पीर जगन्नाथ को नजरन्दाज किया

जब किसी बिरादरी की राजनीति में नेता घुसते हैं तो वे सबसे पहले धार्मिक लोगों की शान को तार-तार करते हैं। इस मामले में भी यही हुआ। अस्पताल की शुरुआत हुई लेकिन किसी भी मौके पर पीर जगन्नाथ को नहीं बुलाया गया। गुरुवार को जब सीएमओ ने दौरा किया और कंवल खत्री ने बढ़चढ़ कर आरएसएस वालों के साथ मिलकर बयानबाजी की तो ऐसे मौके पर पीर जगन्नाथ को बुलाया जा सकता था। लेकिन उन्हें जानबूझ कर नजरन्दाज किया गया। कंवल खत्री गुट से जुड़े एक सूत्र ने कहा कि पीर जगन्नाथ का इसमें क्या काम है। जब अस्पताल विधिवत शुरू होगा, तब हम उन्हें बुलाने पर विचार कर सकते हैं। अभी तो हम लोग तनमनधन से सीमा त्रिखा के साथ हैं जो हमारे प्रधान जी का साथ दे रही हैं। बहरहाल, पीर जगन्नाथ के पास अस्पताल की चाबी अभी भी मौजूद है। लेकिन कंवल खत्री गुट ने डुप्लीकेट चाबी से काम चला लिया। अब शायद पीर जगन्नाथ के पास उन चाबियों में जंग लग जाए। इस अपमान को पीर जगन्नाथ किस तरह बर्दाश्त करेंगे, इसे वक्त तय करेगा।

पर्दे के पीछे की कहानी

पीर जगन्नाथ ने मामले को सुलझाने के लिए दोनों गुटों की कई बार बैठक बुलाई। इसी तरह भाटिया सेवक समाज के सरदार मोहन सिंह भाटिया ने भी पंजाबी बिरादरी की बैठक बुलाई। इसमें कोई फैसला नहीं हो सका। पीर जगन्नाथ ने दोनों पक्षों से साफ कहा कि सरकारी तौर पर जो फैसला आयेगा, चाबी वो उसी को देंगे। भाटिया सेवक समाज की बैठक में विधायक पति अश्विनी त्रिखा भी आए और उन्होंने एक तरह से कंवल खत्री के पक्ष में दूसरे गुट पर समझौते का दबाव डाला। लेकिन कंवल खत्री और उनके सलाहकार जोगिन्द्र चावला को यह समझ आ गया कि दूसरा गुट आसानी से मानने वाला नहीं है। इसके बाद उन्होंने इसे राजनीतिक रसूख के जरिए अस्पताल पर कब्जा करने की साजिश रची। कंवल खत्री गुट ने विधायक सीमा त्रिखा और उनके पति को अस्पताल और इसकी जमीन के फायदे गिनाए। उन्हें बात समझ में आ गई। सीमा त्रिखा ने इसके बाद केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर को जानकारी दी कि कोविड के समय इस अस्पताल को खोला जाना जरूरी है, लेकिन बीच में झगड़ा पड़ा हुआ है। मंत्री गूजर ने शहर की पंजाबी बिरादरी की राजनीति समझे बिना बयान दे दिया कि श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को खुलवाया जाएगा। जोगिन्द्र चावला ने 1 मई को फेसबुक पर पोस्ट डाली, जो कंवल खत्री और उनकी तरफ से थी। उसमें कहा गया था कि अस्पताल खुलवाने के लिए वो लोग केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल, विधायक सीमा त्रिखा, उनके पति, पीर जगन्नाथ, भाटिया सेवक समाज, बन्नूवाल बिरादरी के प्रधान, शिव शक्ति सेवादल, आनंदकांत भाटिया का धन्यवाद करते हैं। चावला की फेसबुक पोस्ट से साफ हो गया कि कुछ चेहरे थे जो पर्दे के पीछे निलंबित प्रधान कंवल खत्री की रहनुमाई में अस्पताल खोलने के लिए रजामंद थे।

संस्थापक हाशमी की भूमिका

अस्पताल के संस्थापकों में से एक एसएम हाशमी ने इसे राजनीतिक अखाड़ा बनाने की निन्दा की। उन्होंने कहा कि मैंने स्व, बृजमोहन भाटिया, सरदार शेर सिंह के साथ मिलकर जिस मकसद से इस अस्पताल की शुरुआत की थी, उसे तार-तार कर दिया गया है। मैं अपनी जिन्दगी में कंवल खत्री गुट को अस्पताल और इसकी जमीन पर कब्जा नहीं करने दूंगा। चाहे हमें बड़ी से बड़ी अदालत में जाना पड़े, हम जाएंगे लेकिन किसी के खानदान को इस संपत्ति पर कब्जा नहीं करने देंगे। हाशमी ने कंवल खत्री की नीयत पर शक जताया। बता दें कि समाजसेवी एसएम हाशमी उर्फ हाजी शब्बन ने बहुत पहले इसी मामले में रोशनलाल गेरा को चुनौती दी थी और केस जीत कर आए थे। लेकिन कंवल खत्री ने सोसायटी और अस्पताल पर कब्जा जमाने के बाद हाशमी को कभी पूछा नहीं और एक तरह से संस्थापक सदस्य की भूमिका शून्य कर दी। लेकिन संस्था का संविधान इस ढंग से बना हुआ है कि संस्थापक सदस्य की भूमिका कभी खत्म नहीं हो सकती।

सील कैसे टूटी

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल नगर निगम फरीदाबाद की जमीन पर कब्जा करके बनाया गया है। यहां पर हाशमी पहले सब्जी वगैरह बोते थे। लेकिन तिकोना पार्क की आटोमोबाइल मार्केट में जब कारीगरों को चोट लगने लगी तो उन्होंने आटोमोबाइल मार्केट एसोसिएशन के तत्कालीन प्रधान बृजमोहन भाटिया के साथ मिलकर डा. डोगरा की मदद से इस जमीन पर अस्पताल की नींव रख दी और जनता की मदद से अस्पताल खड़ा कर दिया। एमसीएफ ने अदालत के आदेश पर हाल ही में यहां सील लगा दी थी। यह एक सरकारी प्रक्रिया है और कोई बड़े से बड़ा अधिकारी सील खोलने की अनुमति कैसे दे सकता है। एमसीएफ के अफसरों ने सील खोलने के मामले में रहस्यमय चुप्पी साध रखी है जबकि इस मामले में रजिस्ट्रार सोसायटीज द्वारा नियुक्त प्रशासक जो एक रिटायर्ड फौजी है, वह आगे-आगे है। उसने जिला प्रशासन से मौखिक निर्देश लेकर सील हटा दी और अब कंवल खत्री गुट से मिल गया है। अगर सील टूटने का मामला अदालत पहुंच गया तो अस्पताल और सोसायटी की फिर से भद्द पिटेगी। हाशमी इस मामले को अदालत में चुनौती दे सकते हैं।

देखी-सुनी

खबरीलाल

अनीशपाल से पुलिस ने ये बरामद किया!!

कांग्रेस नेता अनीशपाल की गिरफ़्तारी पर पुलिस की काफी फजीहत हो रही है। लेकिन पुलिस जो सफाई पेश कर रही है वो उसकी बदमाशी की प्रकाष्ठा है। उसने अनीश को पिछले वर्ष एक फर्जी मुकदमे में नामजद किया था। वो मामला भी धरना प्रदर्शन से संबंधित था। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जिस क्राइम ब्रांच सेक्टर 48 फ़रीदाबाद पुलिस ने अब अनीशपाल को पकड़ा, तो उसने उनसे बरामद क्या किया? दरअसल, अनीशपाल को तमाम अस्पतालों में भागदौड़ करता देख पुलिस ये समझी कि कांग्रेस नेता ज़रूर जीवनरक्षक दवाई और ऑक्सीजन को इधर उधर कर रहे हैं। लेकिन पुलिस ने उनके पास से जो सामान बरामद किया तो अपना सिर पीट लिया। पुलिस को अनीशपाल की गाड़ी से 20 लीटर वाली पानी की बोतल और 50 लोगों के लिए गरमागरम सब्ज़ी और रोटियाँ। यही खाना अनीशपाल बीके अस्पताल में बेसहारा, गरीब मरीज़ों को खिलाने के लिए ले जा रहे थे। पुलिस ने पूछताछ के नाम पर सारा दिन इधर उधर घुमाया लेकिन कुछ हासिल नहीं कर सकी। शहर के तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं की तरफ से अनीशपाल की गिरफ़्तारी का विरोध बढ़ा तो फ़रीदाबाद पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया। बाद में बहुत ही निर्लज्जता से एक ट्वीट करके सफ़ाई पेश की, कि हमने उन्हें एक पुराने केस में पकड़ा है। ...पुलिस की हिप्पोक्रेसी देखिए कि कोरोना काल में उन्हें पुराना केस तब याद आया जब एक शख्स समाजसेवा में जुटा हो।

अम्मा का अस्पताल कब काम आएगा

अपने चेलों में 'अम्मा' के नाम से मशहूर माँ अमृतानंदमयी देवी ने शहर के एक बिल्डर की मदद से ग्रेटर फ़रीदाबाद में सुपर स्पेशिएलटी अस्पताल बनाने के लिए ज़मीन हासिल की। अस्पताल का निर्माण लगभग पूरा है। लेकिन न तो अम्मा यहाँ के लिए समय निकाल पा रही हैं और न अम्मा अभी तक प्रधानमंत्री मोदी से इस अस्पताल का उद्घाटन कराने का समय ले पाई हैं। यहाँ पर 700 बेड की व्यवस्था हो सकती है और कोरोना काल में यह अस्पताल काफ़ी मददगार साबित हो सकता है। लेकिन अम्मा चाहती हैं कि बिना भव्य प्रोग्राम हुए अस्पताल को शुरू नहीं किया जाए। अम्मा के देशभर में आश्रम और अस्पताल हैं। फ़रीदाबाद के इस प्रोजेक्ट से कई धन्नासेठ भी जुड़े हैं लेकिन अम्मा के आगे किसी की नहीं चलती। मज़दूर मोर्चा के पिछले अंक में हमने बताया था कि फरीदाबाद सेक्टर 16ए में सन फ्लैग अस्पताल भी ऐसे ही बेकार पड़ा है। देखा जाए तो फ़रीदाबाद में तमाम इन्फ्रास्ट्रक्चर मौजूद हैं लेकिन सरकार के पास इनके इस्तेमाल की ठोस कार्ययोजना नहीं है।

कोरोना काल में योगी की मानसिकता

गायों के प्रति यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कमिटमेंट पक्का है। जब प्रदेश भर में लोग धड़ाधड़ मर रहे हैं और हाईकोर्ट कह रहा है ये मौतें नहीं नरसंहार है तो योगी आदेश दे रहा है कि यूपी के हर जिले में गायों के लिए एक हेल्प डेस्क बनाई जाए। और हाँ, गायों को कोविड-19 के मद्देनज़र सावधानी बरतने के निर्देश देना भी वे नहीं भूले हैं। उत्तरप्रदेश वासियों तुमने जैसे लोग चुने हैं, वैसी ही शासन व्यवस्था तुमको मिल रही है। तुम इसके लिए अभिशप्त हो।

हरियाणा के निजी स्कूलों में एनसीईआरटी किताबें जरूरी

फ़रीदाबाद (ममो) हरियाणा सरकार ने निर्देश दिया है कि राज्य के सभी प्राइवेट स्कूलों में अब एनसीईआरटी की पुस्तकों से ही पढ़ाई कराई जाए।

राज्य सरकार ने इस संबंध में सभी ज़िला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) को पत्र लिखकर इसे लागू कराने को कहा है। दरअसल, प्राइवेट स्कूल विभिन्न पब्लिशर्स से मोटा कमीशन लेकर उनके यहाँ से प्रकाशित विभिन्न विषयों की पुस्तकों को लगा देते हैं। कुछ किताबें तो सिर्फ़ जबरन ख़रीदाई जाती हैं, निजी स्कूल के शिक्षक उन्हें पढ़ाते तक नहीं।

आरटीआई के साथ अब पहचानपत्र ज़रूरी

फ़रीदाबाद (ममो) मुख्य सचिव हरियाणा ने 6 मई को हरियाणा सूचना का अधिकार (संशोधन) नियम 2021 ज़ारी कर दिए हैं। इस नए प्रारूप में मुख्यत: सूचना आवेदक को आवेदन के साथ सरकार द्वारा जारी किए गए अपने किसी भी पहचान पत्र की प्रति संलग्न करना अनिवार्य होगा।

नए नियमों के अनुसार सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत सूचना का अवेदन करने के इछुक व्यक्ति को सूचना का अधिकार नियम 2009 में दिए आदर्श प्रारूप 'क' के स्थान पर सूचना का अधिकार नियम 2021 में दिया आदर्श प्रारूप प्रतिस्थापित किया जाएगा।

नए प्रारूप में माँगी गई सूचना का विषय, उसकी अवधि एवं अपेक्षित सूचना का वर्णन देने का ही प्रावधान किया गया है।

अखिल भारतीय सूचना अधिकार कार्यकर्ता महासंघ के महासचिव, फरीदाबाद के अजय बहल ने इस विषय में बताया कि सरकार द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के सुचारू रूप से लागू किये जाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक कदम है। यह न केवल अधिक पारदर्शिता लाने में सहायक होगा अपितु कुछ शरारती तत्वों द्वारा सूचना अधिकार अधिनियम के गलत व निजी स्वार्थ के लिए किए जा रहे इस्तेमाल पर भी अंकुश लगेगा।

अजय बहल ने हरियाणा के मुख्य सूचना आयुक्त यशपाल सिंघल का सरकार के पास यह सुझाव भेजने के लिए धन्यवाद किया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06